भ्रष्टाचार निवारण की दिशा में सही कदम

डा0 राकेश कुमार भारती
उप मुख्य सतर्कता अधिकारी/लेखा

भ्रष्टाचार का उद्भव :

जैसा कि आप और हम सभी जानते है कि भ्रष्टाचार का उद्भव आज से नहीं वरन् सैकड़ों वर्षो पूर्व हो चुका है । भारत में भी भ्रष्टाचार की जड़ें बहुत पुरानी हैं । मुगलकालीन चाणक्य, कौटिल्य और अनेकों राजा महाराजाओं के युगों में भी इसका प्रत्यक्ष प्रभाव देखने को मिलता है । यहां तक कि रामायण और महाभारत काल में भी भ्रष्टाचार के अनुकों उदाहरण देखने को मिल सकते हैं । महाभारत युग में गुरू द्रोणाचार्य द्वारा गुरू दक्षिणा में एकलव्य का अंगूठा मांगना भी भ्रष्टाचार का प्रत्यक्ष प्रमाण है । भारत में ब्रिटिश राज के समय भी भ्रष्टाचार का जबरदस्त प्रचलन था । अनेको कुलीनों, राजाओं, जमींदारों और प्रभुत्व सम्पन्न लोगों नें अपने निजी स्वार्थ के लिए भ्रष्टाचार को अपना प्रगति और विकास के साथ–साथ उसे धन संचय और समृद्धि का मार्ग बनाया जिसके द्वारा अनेको लोगों का शोषण किया गया और उनको अन्यायपूर्वक यातनाएँ भी दी गई । लेकिन इन युगांतों में भ्रष्टाचार इनती मात्रा, जगह और व्यवस्थाओं में व्याप्त नहीं था जिनता कि वर्तमान में देखने को मिलता है । भ्रष्टाचार का उद्भव मुख्यतः अति महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति के लिए ही हुआ है । जिस दिन से भ्रष्टाचार का उद्भव हुआ है उसी दिन से चौगुनी प्रगति हुई है और भ्रष्टाचार रूपी बाग हमेशा फलता फूलता आया है । अनेको महापुरूषों और समाज सेवियों ने इसकी रोकथाम के लिए भरसक प्रयत्न और प्रयास किये परन्तु सभी निरर्थक साबित हुए हैं । परिणामस्वरूप आजकल भ्रष्टाचार साफ दिख रहा है । आज भ्रष्टाचार एक सर्वव्यापी रोग बन गया है, जो जीवन के सभी क्षेत्रों धर्म, राजनीति, शिक्षा, व्यापार, चिकित्सा, न्यायतंत्र, शासनतंत्र, अर्थव्यवस्था आदि हर जगह पर दिखाई देता है ।

भ्रष्टाचार क्या है ?

भ्रष्टाचार शब्द भ्रष्ट+आचार का सन्धि है, जिसमें भ्रष्ट बुराई को इंगित करता है और आचार मनुष्य को दिन प्रतिदिन के कार्यकलाप और व्यवहार को दर्शाता है । अतः जीवन में बुरे आचरण को अपनाना ही भ्रष्टाचार है । भ्रष्टाचार किसी भी रूप में किया जा सकता है, चाहे अनैतिक रूप से कमाया हुआ धन, अनैतिक रूप से किया हुआ शारीरिक, मानसिक और सामाजिक शोषण, ये सभी भ्रष्टाचार को प्रदर्शित करते हैं । एक बुरे आचरण से भ्रष्टाचार की शुरूआत होती है जो कि व्यक्ति को निरन्तर इस ओर बढ़ने के लिए प्रेरित करती है ।

भ्रष्टाचार –आवश्यकता और कारण :

कहते हैं कि आवश्यकता अविष्कार की जननी होती है परन्तु भ्रष्टाचार के मामले में यह बात बिल्कुल बेमानी साबित होती है, क्योंकि यह एक बुराई और दुःख का मार्ग है, जिसे व्यक्ति आवश्यकता और जरूरत में कभी भी नहीं अपनायेगा । चूँकि लालच और लोभ में व्यक्ति अंधा होकर अपनी अत्यधिक आवश्यकताओं और महत्वकांक्षाओं की पूर्ति के लिए भ्रष्टाचार रूपी कांटों भरा मार्ग अपनाता है । यदि हम वर्तमान परिपेक्ष में देखें तो हम पायेंगे कि आज व्यक्ति को अपनी तमाम आवश्यकताओं और महत्वाकाक्षांओं को पूरा करने के लिए भ्रष्टाचार ही सबसे सरल और अच्छा माध्यम नजर आता है जिसके द्वारा वह जल्दी

से जल्दी अपनी मंजिल प्राप्त करने के लिए स्वप्न देखते है, जिसके फलस्वरूप वह भ्रष्टाचार के दलदल में फँसता ही जाता है ।

आज नौकरशाही और भ्रष्टाचार एक दूसरे के पर्याय बन गए हैं । राजनीतिज्ञों के लिए भ्रष्टाचार एक सेवा कर अथवा धंधा बन गया है और पूंजीपतियों के लिए व्यापार का एक अभिन्न अंग बन गया है । सद्‌गुण, आदर्श और ईमानदारी जैसे शब्दों का इन लोगों के लिए कोई महत्व नहीं रह गया है और इन सब का उद्देश्य केवल धन और साधन का संचय मात्र रह गया है ।

आज भ्रष्टाचार के मुख्यतः निम्नलिखित कारण हैं जो कि इसे न केवल बढ़ावा देते हैं बल्कि इसको प्रोत्साहित भी करते हैं :–

1. परिवार की आर्थिक जरूरतों की पूर्ति ।
2. उच्च जीवन श्रेणी की चाह ।
3. भोग और विलास की महत्वाकांक्षा ।
4. समय पर न्याय और दोषियों को सजा न मिलना ।
5. शासकीय कार्यों में पारदर्शिता की कमी ।
6. भ्रष्ट व्यक्तियों की समाज एवं व्यवस्थाओं पर अच्छी पहुंच होना, आदि ।

उपरोक्त कारण लोगों को भ्रष्टाचार करने एवं दैनिक कार्यों में इसे अपनाने की प्रेरणा देते हैं, जो कि हमारे विशुद्ध समाज के लिए एक कलंक की तरह है जिसको जड़ से मिटाने की अति आवश्यकता है ।

भ्रष्टाचार निवारण के उपाय :

चिकित्सा विज्ञान में जिस तरह अनेकों बीमारियां मानव शरीर के लिए घातक सिद्ध हुई है, ठीक उसी तरह से अनेकों सामाजिक बुराइयों के सम्मिश्रण के रूप में भ्रष्टाचार हमारी तमाम सामाजिक व्यवस्थाओं को पंगु बना रहा है और वह कैंसर, एड्स, क्षय एवं अन्य संक्रमित रोगों की तरह हमारी मानसिक स्थिति को विकृत कर रहा है । इसकों तुरन्त उखाड़ फेंकना आज की नितांत आवश्यकता बन गया है अन्यथा यह हमारी व्यवस्थाओं को खोखला कर देगा । भ्रष्टाचार आज वह माध्यम बन गया है, जो आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक एवं न्यायिक व्यवस्थाओं को लालच के भ्रमजाल में फँसाकर मानव को जीवन के मूल उद्देश्य से विमुख कर रहा है और जिसके द्वारा व्यक्ति सांसारिक मोह–माया में फँसकर अपने कर्तव्यों को भूल रहा है । एक पुरानी कथा है कि एक बार नारद ने कृष्ण से पूछा कि हे प्रभु ! आपकी माया अपरम्पार है और कृपया एक बार मुझे उसके दर्शन करा दीजिए । इससे मैं धन्य हो जाऊँगा । कृष्ण ने कहा कि ठीक है आज मैं तुम्हें माया के दर्शन करा देता हूँ । दोनों बहुत दूर चलते गए । इसी बीच कृष्ण नें कहा कि नारद मुझे बहुत प्यास लगी है और कहीं से पानी लाकर पिला दो । नारद पानी की तलाश में दूर–दूर तक गया परन्तु कहीं भी पानी दिखाई नहीं दिया । फिर नारद को दूर एक घर दिखाई दिया । नारद ने जाकर घर का दरवाजा खटखटाय तो एक सुन्दर युवती ने घर का दरवाजा खोला । नारद एकटक उसे देखता रहा और उस पर मोहित हो गया । वह युवती भी नारद को देखकर उस पर मंत्रमुग्ध हो गई । नारद ने युवती के पिता की सहमति से युवती से विवाह कर लिया और वहीं पर रहने लगे । कुछ समय बाद उनके बच्चे हुए और वे सुखपूर्वक रह रहे थे । बारह वर्ष के बाद वहां पर भयंकर बाढ़ आई जिसमें नारद की पत्नी और उसके बच्चे बह गए । नारद जब शोक में डूबे थे तब कृष्ण प्रकट हुए और नारद से कहा कि नारद, तुम अब जल लेकर आए हो और मैं कब से तुम्हारा इंतजार कर रहा था । नारद को जब समझ में आया तो उसने कृष्ण से बहुत क्षमायाचना की । चूंकि नारद मोह और सांसारिक भ्रमजाल में पड़ गया था और जो उद्देश्य उन्हें दिया गया था उससे नारद विमुख हो गये थे ।

अतः स्पष्ट है कि धन, लालच, मोह और सांसारिक भ्रमजाल में पड़कर हम अपने आदर्शों, सद्‌गुणों, जीवन के मूल उद्देश्यों और कर्तव्यों से विमुख होकर भ्रष्टाचाररूपी दलदल में धंस जाते हैं । भ्रष्टाचार का सबसे बड़ा प्रयोजन धन सम्पदा अर्जित करना है लेकिन हम सब यह जानते हुए भी अज्ञानी हैं कि यह धन कब तक हमारे साथ रहेगा और कब तक यह हमें सुख की प्राप्ति देगा । धन से किसी को वह सुख नहीं मिल सकता जो शायद दूसरों को आनन्दित करने पर मिलता है । हम अपने आदर्शों, सद्‌गुणें और सुन्दर संस्कारों के माध्यम से भ्रष्टाचार रूपी दानव का खात्मा कर सकते हैं । इसके लिए हमें हमारे दैनिक जीवन में वैचारिक दृढ़ता को अपनाना होगा जिससे हमारा आत्मविश्वास बढ़ेगा, हमारी मनोवृत्ति बदलेगी और हमारे कदम भ्रष्ट आचरण और बुराई की तरफ डगमगाएंगे नहीं ।

भ्रष्टाचार निवारण की दिशा में अगर हम सोचें तो सर्वप्रथम हमें अपने विचारों और धारणाओं को बदलना होगा और साथ ही साथ भ्रष्टाचार के उन्मूलन के लिए निम्नलिखित कदम उठाने होंगे :–

1. हमारी शिक्षा प्रणाली में कुछ इस तरह की अध्ययन सामग्री का समावेश करना होगा जो कि भ्रष्टाचार को एक अपमान और घृणित कार्य इंगित करती हो, जिससे हमारी आने वाली भावी पीढ़ी सतर्क होकर इससे दूर रह सके ।
2. युवा वर्ग को समुचित रोजगार उपलब्ध कराना होगा, जिससे वे आर्थिक रूप से सक्षम हो सके ।
3. भ्रष्टाचार को रोकने के लिए सख्त से सख्त कानून बनाया जाना चाहिए, जिससे भ्रष्टाचारियों को कड़ी सजा मिल सके और लोग भ्रष्ट तरीकों को अपनाने के बारे में सोच भी न सकें ।
4. राजनीतिक स्तर पर भ्रष्टाचार को रोकने के लिए भ्रष्ट जन प्रतिनिधियों को चुनाव में प्रत्याशी बनाने पर प्रतिबंध लगाया जाना चाहिए और उन्हें शीघ्र और उचित दण्ड दिया जाना चाहिए ।
5. शासकीय कार्यों में पूर्ण पारदर्शिता अपनानी होगी ताकि लोगों को तथ्य छुपाने का मौका न मिल सके और साथ ही सूचना के अधिकार को शासकीय कार्यों में प्रभावी और निष्पक्ष रूप से लागू किया जाये जिससे आम आदमी को सही और समय पर सूचना मिल सके और भ्रष्टाचार एवं अनैतिक कार्यों का जनता के सामने खुलासा हो सके ।
6. जनता को जागरूक और सतर्क होना होगा, उन्हें भ्रष्टाचार का बहिष्कार करना होगा ।
7. अनुशासन और नियमों का सख्ती से पालन करना होगा ।

आज भ्रष्टाचार भविष्य के लिए धन संचय का एक पर्याय बन गया है पर वह धन कब तक सुरक्षित होगा यह मनुष्य को खुद को नहीं पता, पर फिर भी मनुष्य अनावश्यक धन का संचय क्यों करता है जो आगे चल कर उसी के लिए संकट, दुःख, कष्ट और डर का एक मुख्य कारण बन सकता है ।

धन बल सींचे मानवा, कु कबहु सुखी ना होय ।
जो सींचे तु आत्म–बल, अति–उपयोगी होय ।।

अर्थात् हे मनुष्य ! तू धन का अनावश्यक संचय क्यों करता है जो कतई सुरक्षित नहीं है । तुझे आत्मबल और आत्म – विश्वास का संचय करना चाहिए जो जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में उपयोगी है । अतः मनुष्य को सदैव भ्रष्टाचार की अपेक्षा ईमानदारी और सच्चाई का मार्ग अपनाना चाहिए ।

*****